भारतीय ज्ञान परंपरा

लेखक
तिलक नाथ पोद्दार



ISBN: 978-93-5592-951-8

Title : Indian Knowledge Tradition

Authors Name : Tilak Nath Poddar

Published By : Tilak Nath Poddar

Publishers Address : Kota, Raipur, Chhattisgarh, 492010

Book Type : E- Book

Email : tilakn693@gmail.com

Edition Details : 1st Edition

ISBN : 978-93-5592-951-8

लेखक परिचय

तिलक नाथ पोद्दार समकालीन भारतीय वैचारिक साहित्य के उन लेखकों में अग्रणी हैं, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक विश्व की जटिल समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका निवास छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में है। आपने कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातकोत्तर (Master in Computer Application) की शिक्षा प्राप्त की है, जिससे उनके चिंतन में तर्क, विश्लेषण और वैज्ञानिक दृष्टि का सशक्त समन्वय दिखाई देता है ।



लेखक / तिलक नाथ पोद्दार

उनकी यह कृति "भारतीय ज्ञान परंपरा" केवल इतिहास या परंपरा का वर्णन नहीं करती, बल्कि संपूर्ण विश्व के समक्ष उपस्थित नैतिक, सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संकटों का तार्किक एवं व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करती है। लेखक का यह दृढ़ मत है कि भारत केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत चेतना है, जिसकी ज्ञान-परंपरा आज भी विश्व को मार्गदर्शन देने की क्षमता रखती है। यह पुस्तक भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित करने वाले दर्शन, विज्ञान, योग, वेदांत, नीति, कर्म और जीवन-पद्धति को समकालीन संदर्भों में स्पष्ट करती है ।

तिलक नाथ पोद्दार की साहित्यिक पहचान केवल वैचारिक लेखन तक सीमित नहीं है। उनकी विशेष काव्य-कृति "कलयुग का कुरुक्षेत्र" वीर रस में रचित एक प्रभावशाली पुस्तक है, जिसमें समकालीन समाज को महाभारत के प्रतीकात्मक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। यह कृति अन्याय, अधर्म और नैतिक पतन के विरुद्ध चेतना का उद्घोष करती है तथा पाठक को संघर्ष, साहस और कर्तव्यबोध की प्रेरणा देती है ।

लेखक का सामाजिक और संगठनात्मक जीवन भी अत्यंत सक्रिय रहा है। वे विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) में छत्तीसगढ़ प्रदेश के सह-मंत्री रह चुके हैं। संगठन द्वारा रायपुर नगर के नेतृत्व की जिम्मेदारी सौंपे जाने के पश्चात उन्होंने शिक्षा, राष्ट्र और समाज से जुड़े विषयों पर सैकड़ों प्रभावी आंदोलनों का नेतृत्व किया। यह अनुभव उनकी लेखनी को जमीनी यथार्थ, वैचारिक दृढ़ता और राष्ट्रबोध प्रदान करता है ।

तिलक नाथ पोद्दार की भाषा शैली शुद्ध, ओजस्वी, विचारप्रधान और उद्देश्यपूर्ण है। वे लेखन को केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का माध्यम मानते हैं। उनका सतत प्रयास भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक पीढ़ी से जोड़ते हुए, उसे वैश्विक समाधान के रूप में स्थापित करना है ।

अनुक्रमणिका		

विश्व संकट की छाया में भारत का पुरातन प्रकाश

जब समूचा विश्व भौतिकता की अंधी दौड़ में सांसें गिन रहा है, जब विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को यंत्र बना डाला है, जब आत्मा से अधिक शरीर, और लोभ से अधिक धर्म की चिंता लुप्तप्राय हो चली है —

तब यह प्रश्न मौन होकर भी सबसे मुखर है : क्या मानवता का पथ अब विनाश की ओर मुड़ चुका है?

आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य को सुविधाएँ दीं — परंतु संतोष नहीं।

उसने मन को गति दी — पर शांति छीन ली।

शब्दों का शोर बढ़ा — पर आत्मा मौन हो गई।

और अब, जब पर्यावरण कराह रहा है, समाज बिखर रहा है, और चेतना सूख रही है,

तब पूरी पृथ्वी की दृष्टि एक ओर उठती है — उस ओर, जहाँ से ज्ञान की प्रथम किरण फूटी थी...

जिस धरा ने "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का स्वप्न रचा था, जहाँ ऋषियों ने वनों में बैठकर ब्रह्मांड का मर्म खोजा,

जहाँ ज्ञान, त्याग और संतुलन — जीवन के स्तंभ माने जाते थे।

वही भारत,

जिसकी मिट्टी में गीता की गूंज है,

जिसके आकाश में उपनिषदों की उदात्तता है,

जिसके जल में योग की तरलता है —

आज फिर से मानवता का दीपक बनने को प्रस्तुत है ।

“भारतीय ज्ञान परंपरा” कोई अतीत की वस्तु नहीं,

बल्कि वह जीवित चेतना है जो आज भी हमारे भीतर सोई है — उसे केवल जगाने की आवश्यकता है ।

इस लेख में हम यह अन्वेषण करेंगे कि आज की वैश्विक चुनौतियाँ, जो सभ्यता को डगमगा रही हैं, उनका समाधान कैसे भारत के पुरातन ज्ञान में, सनातन दृष्टिकोण में, और जीवन के भारतीय संस्कारों में निहित है ।

यह कोई भावुकता नहीं, यह तर्क, अनुभव और शास्त्रों के आलोक में सत्य का अन्वेषण है ।

भारतीय ज्ञान परंपरा: परिभाषा, स्वरूप और ऐतिहासिक संदर्भ

भारतीय ज्ञान परंपरा एक ऐसी सांस्कृतिक-दार्शनिक धारा है, जो मनुष्य, प्रकृति और ब्रह्मांड के परस्पर संबंध को समझने, स्वीकारने और संतुलित करने का प्रयास करती है ।

यह परंपरा केवल सूचनाओं का संचय नहीं, बल्कि सार्वभौमिक सत्य की खोज है —

जो तर्क, अनुभव, आचरण और आत्मबोध के समन्वय से उपजी है।

1. वैदिक युग और ज्ञान की उत्पत्ति

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल वैदिक युग (लगभग 1500–500 ई.पू.) में निहित है ।

चार वेद — ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद — केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं,

बल्कि तत्कालीन समाज, पर्यावरण, चिकित्सा, गणित, खगोल, संगीत और राजनीति तक को छूते हैं ।

ऋग्वेद में 1028 सूक्त हैं, जिनमें जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी जैसे पंचमहाभूतों को देवता रूप में स्वीकार कर प्रकृति-पूजन की आदिम चेतना प्रकट होती है ।

अथर्ववेद में औषधियों, रोगों, तंत्र-मंत्र, शांति प्रयोग आदि के गहरे विवरण मिलते हैं, जो आयुर्वेद का आधार बने ।

2. उपनिषदों की दार्शनिक क्रांति

उपनिषद (लगभग 800–300 ई.पू.) भारतीय ज्ञान परंपरा का दार्शनिक उत्कर्ष हैं ।

इन ग्रंथों में आत्मा (आत्मन्) और ब्रह्म (ब्रह्मन्) की एकता की घोषणा की गई —

"अहं ब्रह्मास्मि", "तत्त्वमसि", "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" जैसे महावाक्य इसी से उपजे ।

बृहदारण्यक उपनिषद, छांदोग्य, कठ, ईश, मुण्डक आदि प्राचीनतम दार्शनिक चिंतन के वैश्विक दस्तावेज़ हैं ।

संयुक्त राष्ट्र संघ की यूनेस्को ने भी माना है कि उपनिषदों में "मानवता के आध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक उत्तरों का ख़ज़ाना" है ।

3. दर्शन शास्त्र की वैज्ञानिकता

छः दर्शनों (षड्दर्शन) — न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा (वेदांत) — में तर्क, प्रमाण, तत्वमीमांसा (metaphysics), ज्ञानमीमांसा (epistemology) और आचरणशास्त्र (ethics) का गहरा विमर्श मिलता है ।

न्याय दर्शन में 16 प्रकार के तर्क-विधि और 4 प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द) का विश्लेषण किया गया है ।

सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष की द्वैतवादी व्याख्या आज भी मनोविज्ञान और योग के संदर्भ में प्रासंगिक है ।

योग दर्शन (पतंजलि) में अष्टांग योग की रूपरेखा दी गई है, जो आज पूरी दुनिया में wellness science के रूप में स्थापित हो चुका है।

इन सभी दर्शनों का उद्देश्य केवल तर्क नहीं, बल्कि मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाने वाला प्रामाणिक मार्ग निर्मित करना था।

4. सामाजिक एवं व्यावहारिक शास्त्र

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल दर्शन या धर्म तक सीमित नहीं रही।

उसने राजनीति, अर्थनीति, चिकित्सा, शिल्प, न्याय, नाट्य, भाषा तक को शास्त्रबद्ध किया।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र (300 ई.पू.)

– राज्य-व्यवस्था, युद्धनीति, कराधान, गुप्तचर व्यवस्था, विदेशी संबंध

– इन सबका शास्त्रीय विश्लेषण करता है।

यह ग्रंथ आज भी IIM और विदेश नीति संस्थानों में पढ़ाया जाता है।

चरक संहिता और सुश्रुत संहिता

– आयुर्वेद की विश्वप्रसिद्ध आधारशिलाएँ हैं,

जहाँ सर्जरी, हृदय रोग, मानसिक चिकित्सा तक का विस्तार मिलता है।

नाट्यशास्त्र (भरतमुनि)

– केवल रंगमंच नहीं,

बल्कि संवेदनाओं, रसों, अभिनय और सौंदर्यबोध का मनोवैज्ञानिक शास्त्र है।

यह ग्रंथ यूनेस्को द्वारा विश्व सांस्कृतिक धरोहर की सूची में भी शामिल है।

5. मूल्य-आधारित जीवन-दृष्टि

भारतीय परंपरा का ज्ञान केवल जानने के लिए नहीं, बल्कि आचरण में उतारने के लिए था।

"धर्म" का अर्थ केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि वह जो धारण करने योग्य है — अर्थात् कर्तव्य, मर्यादा, संयम और करुणा।

"अहिंसा", "सत्य", "अपरिग्रह", "स्वधर्म", "संतोष" — ये सभी व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के स्तंभ थे।

महाभारत को "पंचम वेद" कहा गया, क्योंकि उसमें धर्म, राजनीति, युद्ध, मनोविज्ञान, समाज और जीवन के सभी पहलू विद्यमान हैं।

भगवद्गीता, जो इसी से उत्पन्न हुई, आज भी कर्मयोग, नैतिकता और मानव-दर्शन का सर्वकालिक ग्रंथ मानी जाती है

भारतीय ज्ञान परंपरा एक जीवंत सभ्यता की बौद्धिक और आध्यात्मिक स्मृति है —

जिसमें ज्ञान, अनुभव, तर्क और मूल्य का समुचित समन्वय है ।

इस परंपरा की विशेषता यह है कि यह मनुष्य को न केवल जानने का, बल्कि बनने का आह्वान करती है ।

वर्तमान वैश्विक संकटों के समाधान के लिए हम केवल पश्चिम की ओर देखने के आदी हो चुके हैं, जबकि समाधान हमारे अपने भीतर, हमारी परंपरा की गहराइयों में निहित हैं —

बस आवश्यकता है उन्हें पहचानने, पुनर्पाठ करने, और नवप्रयोग की ।

वैश्विक चुनौतियाँ: संकट के विविध रूप

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में मानव सभ्यता ने जिन ऊँचाइयों को छुआ, वे जितनी चकाचौंध से भरी थीं, उतनी ही छायाएँ अपने पीछे छोड़ गईं ।

आज का मनुष्य तकनीकी दृष्टि से जितना सक्षम हुआ है, नैतिक दृष्टि से उतना ही भटका हुआ प्रतीत होता है ।

यदि हम विश्व की समकालीन चुनौतियों का अवलोकन करें, तो ये समस्याएँ केवल आर्थिक या राजनीतिक नहीं, बल्कि मूलतः आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संकट की उपज हैं ।

ये संकट न केवल समाज को तोड़ रहे हैं, बल्कि मनुष्य के भीतर की शांति, संबंध, और संतुलन को भी विचलित कर रहे हैं ।

कुछ प्रमुख वैश्विक संकटों पर दृष्टिपात करें—

1. **पर्यावरण संकट :** पृथ्वी का संतुलन डगमगाता हुआ विश्व बैंक की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की 60% जनसंख्या जलवायु परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रभावों से प्रभावित हो रही है ।
   ग्लोबल वॉर्मिंग, बर्फबारी का पिघलना, समुद्र-स्तर में वृद्धि, जैवविविधता का विनाश — ये केवल आँकड़े नहीं, बल्कि समस्त पृथ्वी की चेतावनी हैं ।
   संयुक्त राष्ट्र की IPCC रिपोर्ट कहती है कि 2030 के बाद यदि कार्बन उत्सर्जन में तीव्र कटौती नहीं हुई, तो पृथ्वी की औसत तापमान वृद्धि 1.5 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चली जाएगी

— जिसके परिणामस्वरूप विनाशकारी सूखे, बाढ़ और भूस्खलन होंगे। यह संकट केवल विज्ञान की विफलता नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवनदृष्टिकोण की असंतुलित प्रवृत्ति है

— जहाँ प्रकृति को भोग्या मान लिया गया और पूज्या की दृष्टि खो गई।

2. **मानसिक स्वास्थ्य संकट :** भीतर की टूटन विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, 2023 में दुनिया भर में 1 अरब से अधिक लोग मानसिक स्वास्थ्य विकारों से जूझ रहे थे

   — जिसमें डिप्रेशन, एंग्जायटी, अकेलापन और आत्महत्या की प्रवृत्ति प्रमुख हैं ।

   भारत में ही लगभग 20 करोड़ लोग मानसिक समस्याओं से ग्रस्त हैं ।

   विशेषकर 18 से 30 वर्ष की आयु के युवा वर्ग में डिजिटल डिपेंडेंसी, अस्तित्व का संकट, और आत्महीनता के लक्षण तेजी से बढ़े हैं।

   यह संकट केवल दवाओं या परामर्श से नहीं मिटेगा, क्योंकि यह जीवन में अर्थ की अनुपस्थिति, संबंधों की शून्यता और आत्मा से विच्छेद का परिणाम है।

3. **उपभोक्तावाद और भोगप्रधान संस्कृति :** आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था उपभोक्ता की भूख पर आधारित है।

   मार्केटिंग और मीडिया ने मनुष्य को 'मानव' से 'ग्राहक' में परिवर्तित कर दिया है।

   आवश्यकता की जगह लोभ, संतोष की जगह स्पर्धा और स्थायित्व की जगह क्षणिक सुख ने ले ली है।

   2022 में, दुनिया की कुल संपत्ति का 45% केवल 1% लोगों के पास केंद्रित थी।

   संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट बताती है कि दुनिया का 40% भोजन बर्बाद होता है, जबकि 80 करोड़ से अधिक लोग भूख से पीड़ित हैं।

यह एक आर्थिक असंतुलन नहीं, बल्कि एक मूल्यगत और नैतिक विघटन है ।

4. **युद्ध, आतंक और राजनीतिक विखंडन :** यूक्रेन-रूस, इज़राइल-गाज़ा, अफ्रीकी गृहयुद्ध, एशिया में शक्ति संघर्ष
   — आज पूरा विश्व स्थायी शांति से दूर और अस्थायी युद्धों के बीच खड़ा है ।
   SIPRI की 2024 रिपोर्ट बताती है कि पिछले 10 वर्षों में वैश्विक सैन्य व्यय 30% बढ़ा है, जबकि शिक्षा और स्वास्थ्य पर औसत व्यय घटा है ।
   यह स्पष्ट करता है कि हम एक ऐसी दिशा में बढ़ रहे हैं, जहाँ विकास का केंद्र 'मनुष्य' नहीं, बल्कि 'शक्ति' बन गई है ।

5. **तकनीकी गुलामी और सामाजिक विघटन :** आज की पीढ़ी डिजिटल कनेक्टिविटी के युग में जन्मी है, परंतु उसका सबसे बड़ा संकट भावनात्मक एकाकीपन और सामाजिक टूटन है ।
   औसतन एक व्यक्ति दिन में 7-8 घंटे स्क्रीन पर व्यतीत करता है ।
   सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और वर्चुअल इकोनॉमी ने यथार्थ और भ्रम के बीच की रेखा मिटा दी है । यह यंत्र-प्रधानता केवल सुविधाजनक नहीं, बल्कि स्मृति, ध्यान, संबंध और करुणा को भी क्षीण कर रही है ।

इन समस्याओं को देखने पर स्पष्ट होता है कि हमारे संकट केवल बाह्य संरचनाओं में नहीं हैं — वे अंतरात्मा के क्षरण से उपजे हैं।

यह केवल नैतिक पतन नहीं, बल्कि चेतना का विघटन है।

और जब समस्या इतनी मूलभूत हो, तो समाधान भी मूल तक जाने वाला होना चाहिए।

अतः अब समय है यह खोजने का कि — क्या भारत, जिसकी ज्ञान-परंपरा ने आत्मा, धर्म, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच संतुलन की बात कही थी, इन संकटों का कोई स्थायी और शाश्वत समाधान प्रस्तुत कर सकता है ?

भारतीय समाधान: प्राचीन दर्शन से आधुनिक उत्तर तक

भारत की संस्कृति की सबसे अद्वितीय विशेषता यह है कि यह कभी भी समस्या से भागती नहीं, उसे साधती है ।

वह संकट को केवल चुनौती नहीं मानती, बल्कि उसे आत्मबोध और पुनर्निर्माण का अवसर समझती है ।

जैसे— जब अशांत हुआ मन, तो योग का जन्म हुआ ।

जब समाज में विघटन हुआ, तो धर्म और चार आश्रमों की कल्पना आई ।

जब प्रकृति का संतुलन डगमगाया, तो पञ्चमहाभूतों की आराधना और जीवन में उनका समावेश हुआ ।

और जब युद्ध का कोलाहल बढ़ा, तब भगवद्गीता के माध्यम से कर्म और शांति का नया संदेश दिया गया ।

आज जब दुनिया उसी तरह के संकटों से जूझ रही है, तो भारत का प्राचीन ज्ञान पुनः प्रासंगिक, प्रभावी और आवश्यक हो चला है ।

1. **पर्यावरण संकट का समाधान:** “पृथ्वी माता” और पञ्चमहाभूत सिद्धांत भारतीय दृष्टि में
   प्रकृति कोई संसाधन नहीं, बल्कि सजीव देवी है ।
   अथर्ववेद (12.1.12) में पृथ्वी से प्रार्थना की गई है: "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" —
   “पृथ्वी मेरी माता है, और मैं उसका पुत्र हूँ।”

पञ्चमहाभूत सिद्धांत — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश — के अनुसार मानव शरीर और ब्रह्मांड एक ही तत्त्वों से बने हैं।

इसलिए यदि प्रकृति के साथ संतुलन बिगड़ा, तो मानव-स्वास्थ्य और समाज दोनों असंतुलित होंगे।

आधुनिक समाधान में उपयोग: स्थायी विकास (Sustainable Development), मिलेट्स आधारित खेती, Zero Waste जीवनशैली,

ये सब भारतीय जीवनदृष्टि के पुनर्पाठ हैं।

2. **मानसिक स्वास्थ्य का समाधान:** योग, ध्यान और गीता का मनोविज्ञान

आज की मानसिक व्याधियाँ कहीं बाहर नहीं — वे अभ्यंतर विक्षोभ का परिणाम हैं।

भारतीय परंपरा ने मन को "चित्त-वृत्ति" कहा — और उसका समाधान बताया — "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।"

पतंजलि योगसूत्र में अष्टांग योग —

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि — ये न केवल शरीर का संतुलन लाते हैं, बल्कि मानसिक विषाद और अस्तित्व के संकट से उबारते हैं।

गीता (2.14) में कृष्ण कहते हैं: "मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय, शीतोष्णसुखदुःखदाः..." सुख-दुःख आने-जाने वाले अनुभव हैं, उनमें समत्व बनाए रखना ही मानसिक शांति की कुंजी है।

आज पूरी दुनिया International Day of Yoga मनाती है, Mindfulness meditation को अपनाती है, और गीता को management text के रूप में पढ़ती है ।

3. **उपभोक्तावाद का समाधान:** अपरिग्रह और संतोष की संस्कृति भारतीय मूल्य-व्यवस्था का मूलमंत्र है: “तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा” (त्यागपूर्वक उपभोग करो) ।
   यहाँ अति को वर्जित माना गया, और संतोष को सर्वोच्च संपत्ति ।
   तिरुक्कुरल, बुद्ध की धम्मपद, जैन आगम, गांधी की विचारधारा — सभी “minimum needs, maximum contentment” की बात करते हैं ।
   आज Circular Economy, Minimalism, Slow Living — ये सभी भारतीय अपरिग्रह के वैश्विक रूपांतर हैं ।

4. **सामाजिक विघटन और युद्ध का समाधान:** सह-अस्तित्व और वसुधैव कुटुम्बकम्
   भारत ने कभी जीतने की संस्कृति नहीं रची, उसने जीवन की संस्कृति गढ़ी । महाभारत में शांति पर्व, बुद्ध की “अहिंसा परमो धर्मः” की शिक्षा, गांधी का “सत्याग्रह”, यह सभी उस परंपरा के अंग हैं, जहाँ सत्य, करुणा और शांति सर्वोपरि हैं ।
   “वसुधैव कुटुम्बकम्”
   — (यह संपूर्ण विश्व एक परिवार है)
   — यह नीति शास्त्र की अवधारणा नहीं, बल्कि जीवित दर्शन है । भारत की G20 अध्यक्षता (2023) में यही उद्घोष गूंजा था: “One Earth, One Family, One Future.”

5. **तकनीकी गुलामी का समाधान:** संयम और विवेक की साधना जहाँ आधुनिक मनुष्य external tools पर निर्भर होता जा रहा है, वहीं भारतीय परंपरा अंतर्मुखी साधना पर बल देती है ।
   स्वाध्याय, मौन, संकल्प, ध्यान, इन सबकी रचना इसीलिए की गई थी कि बाहरी उपकरण कभी भीतर की सत्ता पर हावी न हो सकें ।
   डिजिटल डिटॉक्स, मिडफुलनेस ऐप्स, टेक-फ्री रिट्रीट्स — ये सभी भारतीय ज्ञान परंपरा के लघु-अनुसरण मात्र हैं ।

इन सभी वैश्विक संकटों का केंद्र मनुष्य की चेतना है, और समाधान भी उसी चेतना के पुनरुद्धार में है ।

भारतीय ज्ञान परंपरा

– न तो समयबद्ध है,

– न सीमाबद्ध,

– और न ही धर्म-विशेष तक सीमित ।

यह एक सार्वभौमिक उत्तर है, जिसमें सत्य, करुणा, संतुलन और आत्मा की पुकार सभी समाहित हैं ।

आधुनिक भारत में प्राचीन ज्ञान का पुनर्प्रयोग

(भारत द्वारा अपनी ही जड़ों से भविष्य को सींचने की यात्रा)

आधुनिक भारत अब उस चरण में प्रवेश कर चुका है जहाँ वह केवल पश्चिम की अनुकृति नहीं बनना चाहता, बल्कि अपनी मूल चेतना को समझकर, उसे आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित कर रहा है।

यह न तो परंपरा से पलायन है, और न ही अंधानुकरण, बल्कि एक सर्जनात्मक पुनर्पाठ है — जहाँ वेद, उपनिषद और पुरातन तत्त्वज्ञान आज के भारत में नीति, विज्ञान, जीवनशैली और शिक्षा का स्वरूप ले रहे हैं।

1. **शिक्षा में भारतीय दृष्टिकोण का पुनर्स्थापन :** नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
   इसमें पहली बार भारतीय ज्ञान परंपरा को औपचारिक रूप से शिक्षा-नीति का अंग बनाया गया।
   वैदिक गणित, योग, आयुर्वेद, दर्शन, तर्कशास्त्र, न्यायशास्त्र — अब पाठ्यक्रमों में शामिल हो रहे हैं।
   गुरुकुल प्रणाली के मूल्य
   — जैसे कि आचार्य-केंद्रित शिक्षा, संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण, और जीवनोपयोगी ज्ञान
   — अब नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वैदिक साइंसेज़, IITs में दर्शन-शास्त्र केंद्र, और IIMs में गीता-प्रेरित लीडरशिप मॉडल्स के रूप में लौट रहे हैं।

यह एक संकेत है कि ज्ञान अब केवल डिग्री नहीं, बल्कि संस्कार और दर्शन भी है।

2. **योग और आयुर्वेद का वैश्विक स्वीकार :** भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तावित 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' को संयुक्त राष्ट्र ने मात्र 90 दिनों में पारित कर दिया — जो इतिहास की सबसे तेज़ स्वीकृति थी।
   आज 190 से अधिक देश योग को स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के लिए अपना चुके हैं।
   AIIMS और अन्य मेडिकल संस्थानों में अब आयुर्वेद आधारित उपचारों पर वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं। आयुष मंत्रालय के अंतर्गत, आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी को मान्यता मिली है — जिससे भारत एक स्वदेशी चिकित्सा नवजागरण की ओर बढ़ रहा है।
   यह सिद्ध करता है कि ज्ञान परंपरा का पुनर्जन्म अब केवल विचारों में नहीं, नीतियों और संस्थानों में भी हो रहा है।

3. **नीति और शासन में भारतीय जीवन-दृष्टि का प्रवेश :** 'लोक कल्याण मार्ग' — केवल प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम नहीं, बल्कि राजधर्म को लोकसेवा में बदलने की सांस्कृतिक दृष्टि है।
   'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' — यह केवल नारा नहीं, गीता के निष्काम कर्म और समभाव का लोकतांत्रिक अनुवाद है।
   नीति आयोग के कुछ प्रमुख अभियान — जैसे कि POSHAN अभियान, मिलेट मिशन, स्वस्थ भारत, भविष्य में ग्रीन-टेक आधारित योजनाएँ — सभी भारतीय सोच के उस तत्व को सामने लाते हैं जहाँ संतुलन, संयम और स्वावलंबन है।

4. **वैश्विक मंचों पर भारतीय विचारों की प्रतिष्ठा :** 2023 में G20 शिखर सम्मेलन का मंत्र था — "वसुधैव कुटुम्बकम् — एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" जो स्पष्ट रूप से भारत की वैश्विक चेतना का प्रतिबिंब है ।

   Climate Summit, WHO, World Economic Forum में भारत ने अपनी सांस्कृतिक अवधारणाओं — धर्म, प्रकृति-पूजा, योग, जीवन-चक्र, नारीशक्ति — को आधुनिक शब्दावली में प्रस्तुत किया है ।

   यह वह क्षण है जहाँ "श्रुति" अब "संयुक्त राष्ट्र में नीति" बन गई है ।

5. **विज्ञान और टेक्नोलॉजी में भारतीय दृष्टिकोण :** ISRO, जिसने 'चंद्रयान' को चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर उतारा, उसका नाम ही है — "प्रज्ञान रोवर" — जो बुद्धि और ज्ञान का प्रतीक है ।

   IITs में अब दर्शन और विज्ञान के अंतर्संबंधों पर कोर्स चालू हैं — जैसे कि Quantum Physics और उपनिषद, या AI ethics में योग-दर्शन की भूमिका । भारतीय विज्ञान अब सिर्फ तकनीक नहीं, बल्कि तत्त्वदृष्टि और मूल्यनिष्ठा को साथ लेकर चल रहा है ।

6. **साहित्य, कला और संस्कृति में पुनर्जागरण :** प्राचीन भारतीय संगीत में "नाद" को ब्रह्म माना गया — आज वह ध्वनि-चिकित्सा और मूड थेरेपी के रूप में लौट रहा है ।

   पंचतंत्र, महाभारत, उपनिषद आधारित सिनेमा और OTT श्रृंखलाएँ अब युवाओं को मूल संस्कृति से जोड़ने का सेतु बन रही हैं ।

   भारत के त्योहारों, हस्तशिल्प, रसोई, भाषाओं और रीति-नीति को अब सांस्कृतिक पूँजी के रूप में पुनः व्याख्यायित किया जा रहा है ।

आज का भारत केवल बीते गौरव को याद नहीं कर रहा — वह उसे आधुनिक संदर्भों में रूपांतरित कर रहा है।

यह पुनर्प्रयोग है — जहाँ प्राचीन शांति, समता और संतुलन की चेतना वर्तमान की नीति, शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति में ढलकर विश्व मानवता को दिशा दे रही है।

भारतीयता” ही मानवता का भविष्य है

"भारत कोई भौगोलिक इकाई मात्र नहीं है । यह एक चेतना है, एक दृष्टि है, एक जीवित परंपरा है ।" — (स्वामी विवेकानन्द)

21वीं शताब्दी का मनुष्य तकनीकी चमत्कारों के बीच खड़ा है, परंतु भीतर से अकेला, अस्त-व्यस्त और अनिश्चित है ।

उसकी चेतना विखंडित है —

– वह तेजी से उपभोग कर रहा है,

– तेजी से विकसित हो रहा है,

पर उतनी ही तेजी से अपने आप से दूर हो रहा है ।

यही वह समय है जहाँ भारत की 'जीवंत ज्ञान परंपरा' एक दीपशिखा बनकर सामने आती है ।

भारत: राष्ट्र नहीं, एक दर्शन भारत का वैशिष्ट्य उसकी राजनीति या अर्थव्यवस्था में नहीं, बल्कि उसकी उस आध्यात्मिक दृष्टि में है जो 'अहं' को नहीं, 'अहम् ब्रह्मास्मि' को केंद्र में रखती है ।

.जहाँ पश्चिमी सोच कहती है — I think, therefore I am,

वहाँ भारतीय सोच कहती है — I am, therefore all is.

. यह विचार कि संसार एक परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम्)

. यह ज्ञान कि सब कुछ ब्रह्म है

. यह संतुलन कि भोग और त्याग एक साथ चल सकते हैं

ये सब भारतीयता की मूल चेतना हैं ।

. समस्या मन में है, समाधान भी वहीं है ।

आज की वैश्विक चुनौतियाँ — पर्यावरण संकट, युद्ध, मानसिक रोग, तकनीकी विस्थापन, सामाजिक विघटन — इनका केंद्र एक ही है : मानव-चेतना की विकृति ।

भारत इसी चेतना का शुद्धिकरण करता है — योग से, ध्यान से, दया से, त्याग से, संतुलन से ।

. भारत कहता है — "परिवर्तन बाहर नहीं, भीतर शुरू होता है।"

भारतीयता: न कोई धर्म, न कोई सीमा "भारतीय ज्ञान परंपरा" किसी जाति, संप्रदाय, या भू-भाग तक सीमित नहीं ।

यह तो सत्य की खोज है, जो मनुष्य से परमात्मा तक जाती है ।

. यह बुद्ध में भी है,

.गीता में भी,

. तिरुक्कुरल में भी,

. और गांधी के जीवन में भी ।

इसीलिए भारत विविधता में एकता नहीं, बल्कि एकता में बहुलता का उत्सव है ।

सदियों तक भारत को परिभाषित किया गया —

– कभी उपनिवेश के रूप में,

– कभी तीसरी दुनिया के देश के रूप में,

– कभी आध्यात्मिक पर्यटन स्थल के रूप में।

अब समय है कि भारत स्वयं अपनी परिभाषा बन जाए।

. ऐसा भारत जो अपनी जड़ों से जुड़ा हो,

. जो अपने ज्ञान को केवल किताबों में नहीं, नीति और जीवन में उतारे,

. जो "विश्वगुरु" शब्द को नारे की तरह नहीं, बल्कि कर्तव्य की तरह जिए।

जहाँ दुनिया युद्ध में समाधान खोजती है, भारत शांति में संकल्प देखता है।

जहाँ अन्य विकास को उपभोग से जोड़ते हैं, भारत संतुलन और संयम से जोड़ता है।

जहाँ संकट में राष्ट्र स्वार्थी हो जाते हैं, भारत वसुधैव कहता है।

और जहाँ अन्य 'सत्य' को सत्ता मानते हैं, भारत 'सत्य' को साधना मानता है।

इसलिए कहना अतिशयोक्ति नहीं कि —

"21वीं सदी भारत की होगी, यदि भारत अपने 'आप' को पहचान सके।"

और यदि भारत जागा, तो सिर्फ वह नहीं, पूरी मानवता जागेगी।

लेखक का अपील

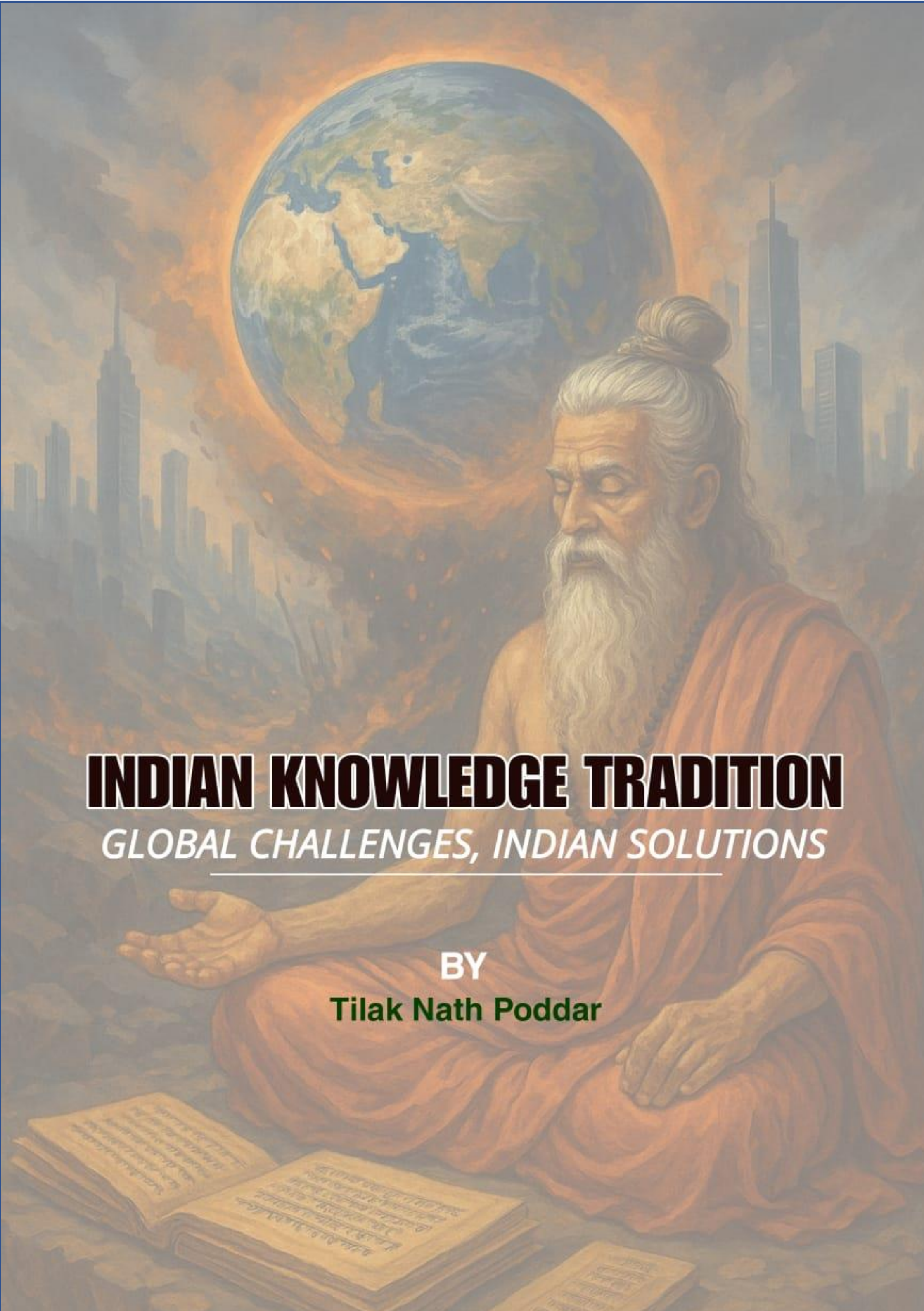
यदि आप युवा हैं, तो आप इस चेतना के वाहक हैं।

. अपने जीवन में भारतीय ज्ञान की भूमिका खोजिए।

. पश्चिमी प्रभाव में नहीं, भारतीय प्रकाश में सोचिए।

. केवल इतिहास न पढ़िए, अपनी परंपरा को वर्तमान बनाइए।

क्योंकि भारत कोई बीता हुआ समय नहीं, वह एक चलती हुई नदी है — जो आज भी प्रवाहित हो सकती है, यदि हम उसके स्रोत को पुनः पहचानें।



INDIAN KNOWLEDGE TRADITION

GLOBAL CHALLENGES, INDIAN SOLUTIONS

BY

Tilak Nath Poddar